بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-27.05.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

अल्लाह तआला ने इस्लाम की उन्नति के जो वादे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हैं वे अवश्य पूरे होंगे, जो लोग ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे वे अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते चले जाएँगे।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 27 मई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज 27 मई है, यह दिन अहमदिया जमाअत में ख़िलाफ़त दिवस के नाम से जाना जाता है। हम हर साल ख़िलाफ़त के जलसे करते हैं, परन्तु क्यूँ? इस सवाल का जवाब हमें सदैव सामने रखना चाहिए तथा अपने बच्चों को भी इस पर विचार करने और सोचने के लिए कहना चाहिए। इस दिन का आरम्भ 27 मई 1908 ई. को हुआ था जब अल्लाह तआला ने अपने वादों के अनुसार हम पर कृपा करते हुए अहमदिया जमाअत में ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी फ़रमाया था।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाना कि तुम में ख़िलाफ़त अला मिनहाजुन्नबुव्वत (नबुव्वत का अनुसरण करने वाली ख़िलाफ़त) अन्तिम युग में स्थापित होगी, यह फ़रमा कर आपका चुप हो जाना इस बात को व्यक्त करता है कि यह ख़िलाफ़त का निज़ाम एक लम्बी अवधि तक चलने वाला निज़ाम है। यह जो कुछ लोग समझते हैं कि इस चुप हो जाने का मतलब यह है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद क़ायम होने वाला यह निज़ाम जल्दी समाप्त हो जाएगा, ये

सब लोग अनुचित धारणा वाले हैं। स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस को स्पष्ट कर दिया है कि यह निज़ाम जारी रहने वाला निज़ाम है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है तथा उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है क्यूँकि वह स्थाई है जिसकी श्रंखला क़यामत तक नहीं टूटेगी और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ, लेकिन जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी।

अतः भाग्यशाली हैं हममें से वे लोग जो अहमदिया ख़िलाफ़त के साथ सदैव जुड़े रहें तथा अपनी नस्लों को भी इसके लिए सदुपदेश देते रहें तथा दुर्भाग्य शाली हैं वे लोग जो अहमदिया ख़िलाफ़त को किसी दौर तक सीमित करना चाहते हैं अथवा यह सोच रखते हैं। ऐसे लोग सदैव की भांति असफलता तथा नाकामी देखेंगे।

अल्लाह तआला ने इस्लाम के पुनरुद्धार तथा उन्नति के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो वादे किए हैं, वे वादे अवश्य पूरे होंगे। इन्शाअल्लाह जमाअत इस्लाम के ग़ल्बः के दिन देखेगी। जो लोग ख़िलाफ़त से जुड़े रहेंगे वे अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनते चले जाएँगे। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के जिन वादों को वर्णन किया है उन्होंने अपने अपूर्व सीमा तक पहुंचना है और यह आपके बाद जारी ख़िलाफ़त के निज़ाम के द्वारा ही पहुंचना है। अल्लाह तआला जमाअत को विकसित कर रहा है, स्वयं लोगों का मार्ग दर्शन फ़रमाता है, ख़िलाफ़ के साथ उनको जोड़ता है और यह इंसान के बस की बात नहीं है। जमाअत के लोगों तथा ख़लीफ़-ए-वक़्त को एक सुदृढ़ बन्धन में बाँधना जिसका उदाहरण सम्भव न हो, यह इंसान के बस की बात नहीं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की बैअत जिस तरह लोगों ने की, वह अल्लाह तअला के शुद्ध समर्थन तथा सहायता नहीं थी तो और क्या था। सिवाए कुछ पाखंडी लोगों के, जो हर जमाअत में होते हैं, ख़िलाफ़त के लिए बलिदान देने वाले तथा इसके चाहने वाले बढ़ते चले गए। फिर दूसरी ख़िलाफ़त के चयन के समय उन्हीं विरोधियों ने शोर मचाया, वावजूद इन लोगों के बहकाने, शोर मचाने तथा उपद्रव एवं फ़साद पैदा करने के, दुनिया ने देखा कि किस प्रकार तेज़ी से जमाअत प्रगति करती चली गई। दुनिया में मिशन हाउस खुले, मस्जिदें बनीं, लिट्रेचर का प्रकाशन हुआ। वह काम जिनके करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे, आगे बढ़ते रहे। फिर तीसरी ख़िलाफ़त में अल्लाह तआला ने बावजूद उस समय के सरकारी हमलों के, जमाअत को उन्नति प्रदान की। भीख का कटोरा जमाअत के हाथ में पकड़ाने का इरादा रखने वाले स्वयं बुरी हालत में दुनिया से

विदा हुए। फिर चौथी ख़िलाफ़त में विकास का एक और द्वार खुला। जमाअत ने अल्लाह तआला के समर्थन एवं सहायता के दृश्य देखे, इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार के नए नए रास्ते खुले। ख़लीफ़-ए-वक़्त के हाथ काटने का सोचने वालों के अपने हाथ कट गए तथा वातावरण में उनके शरीर के टुकड़े बिखर गए परन्तु जमाअत की प्रगति के क़दम नहीं रुके, तबलीग़ के मदान में विकास हुआ, एम.टी.ए. का शुभारम्भ हुआ जिसके माध्यम से हर घर में अहमदियत का पैग़ाम पहुंचना शुरु हुआ। यदि यह अल्लाह तआला के वादों का पूरा होना नहीं तो और क्या था। फिर पाँचवीं ख़िलाफ़त में भी अल्लाह तआला ने अपनी सहायता एवं समर्थन के दृश्य दिखाए। एक के बजाए एम. टी. ए. के सात आठ चैनल विभिन्न भाषाओं में जारी हुए। विश्व की विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रोग्रामों के अनुवाद होने शुरु हो गए। दुनिया के हर कोने तक जहाँ पहले एम.टी.ए. नहीं जा रहा था, वहाँ भी एम.टी.ए. पहुंच गया तथा वहाँ की अपनी भाषा में उन लोगों, उन देशों तथा उन क्षेत्रों के रहने वालों को अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का सन्देश पहुंचने लग गया जिससे लाखों दिव्य आत्माओं को अहमदियत क़बूल करने का सामर्थ्य मिला। फिर अल्लाह तआला ने एम.टी.ए. तथा रेडियों प्रोग्रामों के अतिरिक्त स्वयं भी लोगों का मार्ग दर्शन किया और लोगों को सपने के माध्यम से तथा विभिन्न लिट्रेचर के द्वारा अहमदियत के पैग़ाम को स्वीकार करने की तौफ़ीक़ दी।

हम जब अहमदियत का इतिहास देखते हैं तो पता चलता है कि किस तरह कुछ लोगों का स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की ओर अल्लाह तआला ने आप अलै. के ज़माने में भी मार्ग दर्शन फ़रमाया था। फिर यह क्रम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के ज़माने में भी जारी रहा, अल्लाह तआला ख़ुद रहनुमाई फ़रमाता रहा। फिर दूसरी ख़िलाफ़त में भी अनेक ऐसी घटनाएँ हैं। पुराने ख़ानदानों में यह रिवायत चली आ रही है कि किस तरह अल्लाह तआला ने उनके बड़ों को हक़ क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी। फिर तीसरी ख़िलाफ़त में भी यही सिलसिला नज़र आता है। चौथी ख़िलाफ़त में भी दिव्य आत्माओं को अल्लाह तआला ने अहमदियत क़बूल करने की ओर मार्ग दर्शन फ़रमाया। ये सब अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादों का परिणाम था। इस प्रकार हर एक ख़िलाफ़त के दौर में जमाअत बढ़ती रही। पाँचवीं ख़िलाफ़त में भी अल्लाह तआला के यही व्यवहार हैं, अल्लाह तआला तबलीग़ के नए नए रास्ते भी खोलता जा रहा है तथा लोगों के दिलों को भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को जो इस्लाम का मूल सन्देश है, उसको सुनने तथा स्वीकार करने की ओर आकर्षित करता चला जा रहा है। अहमदियत क़बूल करने की ऐसी ऐसी घटनाएँ होती हैं जो शुद्ध रूप से अल्लाह के समर्थन का पता दे रही होती हैं अन्यथा केवल मानव प्रयासों से कभी इस प्रकार लोग क़बूल न करें।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया भर से सपनों के माध्यम से अहमदियत क़बूल करने के अत्यंत ईमान वर्धक वृत्तांत सुनाए, फिर फ़रमाया- अतः यह है वह निष्ठा एवं प्रतिज्ञा पालन का सम्बंध जो अल्लाह तआला लोगों के दिलों में पैदा कर रहा है और इन्शाअल्लाह क़यामत तक अल्लाह तआला यह वफ़ा एवं श्रद्धा में बढ़ने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को प्रदान करता रहेगा, ख़िलाफ़ते अहमदिया को प्रदान करता रहेगा, दुनियादार इसको नहीं समझ सकते।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जर्मनी में एक अरब ने बैअत की तो उसके जानने वाले ने उससे कहा कि तुम क्या क़ादियानी हो गए हो? उस नौमुबाए ने उत्तर दिया कि तुम लोग यहाँ सौ अरब हो, तुम लोग किसी बात पर जमा नहीं हो सकते, अहमदिया जमाअत में एक इमाम है और उसके कहने पर जमाअत उठती है और बैठती है तथा इसी कारण से उसके कामों में बरकत है, तो अब तुम ही बताओ कि तुम्हारे में क्या विशेषता है जो मैं तुम्हारे साथ मिल जाऊँ और इनको छोड़ दूँ।

फ़रमाया- अतः जब तक ख़िलाफ़त से हर अहमदी चिमटा रहेगा, अल्लाह तआला की कृपाओं का उत्तराधिकारी बनता रहेगा। इसके लिए हमें अपने कर्मों को भी ख़ुदा तआला की शिक्षानुसार ढालना होगा, तभी यह अनुकम्पा लाभकारी होगी। यही अल्लाह तआला का वादा है कि जो लोग ईमान लाने के साथ अपने अमल अल्लाह तआला के बताए हुए तरीक़े के अनुसार रखेंगे, वे ख़िलाफ़त की बरकतों से लाभान्वित होते रहेगे अर्थात हम अल्लाह तआला पर सम्पूर्ण ईमान लाते हुए उसकी इबादत का हक़ अदा करने वाले भी हों और हमारा प्रत्येक अमल अल्लाह तआला की प्रसन्नता खोजने वाला हो, तभी हम लाभ प्राप्त करेंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हर अहमदी का ख़िलाफ़त से निष्ठा एवं प्रतिज्ञा पालन का सम्बंध होना चाहिए और वही बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे जो इस स्तर को प्राप्त करने वाले होंगे, और जब यह होगा तभी हम आज ख़िलाफ़त दिवस के मनाने के हक़ को अदा करने वाले होंगे। अल्लाह तआला सबको सामर्थ्य प्रदान करे कि वे ख़िलाफ़त की बैअत का हक़ भी अदा करने वाले हों और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को भी प्राप्त करने वाले हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131